ऑनलाइन पाठ्य सामग्री

वर्ग — स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)
सत्र — 2020 - 2023
पत्र — प्रथम
शीर्षक — हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में आचार्य द्विवेदी का योगदान

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में आचार्य द्विवेदी का योगदान

1939 में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' लिखकर हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवायी। आचार्य द्विवेदी जी ने भारतीय संस्कृति की ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया में हिन्दी साहित्य के उद्भव और विकास की खोज किया एवं उसके समुचित स्थान दिलाने का प्रयत्न किया। ऐसा करने का मुख्य कारण उस युग से संबंधित युगीन प्रश्नों का दबाव एवं उसको हल करने का प्रयत्न था। ज्ञातव्य है कि आचार्य शुक्ल की इतिहास दृष्टि का विकास अगर गाँधीवादी समन्वयवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हुआ, तो द्विवेदी जी की इतिहास दृष्टि का विकास वामपंथी राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में। वामपंथ के ~~[illegible]~~ प्रभाव में आचार्य द्विवेदी ने यदि भारतीय समाज के ~~[illegible]~~ इसके ~~अंतर्विरोध~~ द्वन्द्वात्मक ढाँचे की पृष्ठभूमि में अंतर्विरोधों और इसकी जटिलता को समझा तो राष्ट्रवादी चेतना के प्रभाव में साहित्य के स्वरूप में आनेवाले परिवर्तनों के आंतरिक कारणों की पहचान की।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी शुक्ल जी की अवधारणा में परंपरा और सामाजिक अंतर्विरोध

एवं सामाजिक विकास की जटिलता को जोड़ते हैं। द्विवेदी जी के यहाँ परंपरा पर जोर के साथ अंतर्विरोधों को स्वीकारते हैं। द्विवेदी जी ने शुक्ल जी के यहाँ मौजूद साहित्यिकता और सामाजिकता के साथ-साथ शिक्षित जनता और जनता के भेद को नोटिस लेते हुए कहा कि शिक्षित जनता ही नहीं, वरन् जनता की प्रवृत्ति से साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार विभिन्न प्रवृत्तियों के पारस्परिक संबंधों से किसी विशेष युग प्रवृत्तियों के विशेषता का निर्धारण होता है। प्रवृत्तियों के बीच में पारस्परिक संबंध सोच्य और सहयोगी न होकर परस्पर विरोधी भी हो सकता है। द्विवेदी जी के मतानुसार किसी भी प्रवृत्ति का उदय आकस्मिक नहीं होता, उसकी एक सुदीर्घ परंपरा चलती रहती है। इसलिए किसी युग की ऐतिहासिक विशेषता सिर्फ उस युग की परिस्थितियों के संदर्भ में नहीं समझी जा सकती, इसके लिए हमें परंपरा के साथ उसके गहरे संबंधों का पड़ताल करना अति-आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर सिद्ध-नाथ साहित्य को देखा जा सकता है जिसे समझे बगैर कबीर को समझना मुश्किल है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में भक्ति काव्य की विवेचना, भक्ति आंदोलन के उद्भव तथा भक्ति काव्यों की विवेचना के संदर्भ में नई व्याख्याओं को सामने लाने में भी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। आचार्य द्विवेदी ने संत और भक्ति काव्य की वर्ण-विरोधी एवं जाति-विरोधी दृष्टिकोण (अपने युग में प्रचलित सामंती मूल्यों पर प्रहार) किया है। उन्होंने भक्ति आंदोलन को न तो इस्लाम की प्रतिक्रिया माना और न ही भक्ति काव्य को हताश हिन्दू जाति की रचना। उन्होंने भक्ति आंदोलन को भारतीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास मानते हुए सिद्धों-नाथों से जोड़ा और लोक-शास्त्र के बीच द्वंद्व के परिप्रेक्ष्य में इसके उद्भव की व्याख्या की। इनके अनुसार भक्ति काव्य में सामान्य जनता की आस्था का आख्यान होकर कवियों ने लोकजीवन का चित्रण किया है।

इसी प्रकार रीतिकाल के प्रसंग में इसके उद्भव की व्याख्या युगीन संदर्भ में करने के साथ-साथ उसे उत्तरवर्ती संस्कृत साहित्य, लक्षण-ग्रंथ, और कामशास्त्रीय रति रहस्य से संबंधित ग्रंथों से जोड़ा। साथ ही, उन्होंने रीतिकालीन साहित्य के बाहर के कवियों को भी स्पष्ट किया। रीतिकाल की रूढ़िबद्ध कविता की तुलना में आलम जैसे लोकप्रिय गीतों को द्विवेदी जी ने ज्यादा बेहतर माना। इसके पीछे उनका तर्क था कि आलम गीतों के माध्यम से लोकजीवन और उससे संबंधित समस्याओं को आसानी से समझा जा सकता है। स्पष्ट है कि द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा को एक नए इतिहास-बोध से समृद्ध किया।

डॉ० मोनिका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
ए.पी.एस.एम. कॉलेज, बरौनी।